❍ 10 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *स्वयं को मधुबन निवासी अनुभव किया ?*

➢➢ *"एक बाप दूसरा न कोई" - यह अनुभव किया ?*

➢➢ *संकल्पों में भी किसी विकार ने टच तो नहीं किया ?*

➢➢ *अव्यक्त मिलन के अनुभवों को बढाया ?*

____

⋰˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

⋰˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ज्ञान के मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का या ट्रैफिक कण्ट्रोल का बीच-बीच में दिन मुकरर करो। अगर किसको छुट्टी नहीं भी मिलती हो, *सप्ताह में एक दिन तो छुट्टी मिलती है, उसी प्रमाण अपने-अपने स्थान के प्रोग्राम फिक्स करो। लेकिन विशेष एकान्तवासी और खजानों के एकानामी का प्रोग्राम अवश्य बनाओ।*

⋰˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

————————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✺ *"मैं तीव्र पुरुषार्थी आत्मा हूँ"*

〰✧ अलबेलापन छोड़ दो। ठीक हैं, चल रहे हैं, पहुँच जायेंगे-यह अलबेलापन है। अलबेले को इस समय तो मौज लगती है। जो अलबेला होता है उसे कोई फिक्र नहीं होता है, वह आराम को ही सब-कुछ समझता है। तो अलबेलापन नहीं रखना। पाण्डव सेना हो ना। सेना अलबेली रहती है या अलर्ट रहती है? *सेना माना अलर्ट, सावधान, खबरदार रहने वाले। अलबेला रहने वाले को सेना का सैनिक नहीं कहा जायेगा। तो अलबेलापन नहीं, अटेन्शन! लेकिन अटेन्शन भी नेचुरल विधि बन जाये।*

〰✧ *कई अटेन्शन का भी टेन्शन रखते हैं। टेन्शन की लाइफ सदा तो नहीं चल सकती। टेन्शन की लाइफ थोड़ा समय चलेगी, नेचुरल नहीं चलेगी। तो अटेन्शन रखना है लेकिन 'नेचुरल अटेन्शन' आदत बन जाये।* जैसे विस्मृति की आदत बन गई थी ना। नहीं चाहते भी हो जाता है। तो यह आदत बन गई ना, नेचुरल हो गई ना। ऐसे स्मृतिस्वरूप रहने की आदत हो जाये, अटेन्शन की आदत हो जाये। इसलिए कहा जाता है आदत से मनुष्यात्मा मजबूर हो जाती है। न चाहते भी हो जाता है-इसको कहते हैं मजबूर।

〰✧ तो ऐसे तीव्र पुरुषार्थी बने हो? *तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् विजयी। तभी माला में आ सकते हैं। बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। सदैव अलर्ट माना सदा एवररेडी! आपको क्या निश्चय है-विनाश के समय तक रहेंगे या पहले भी जा सकते हैं?

पहले भी जा सकते हैं ना। इसलिए एवररेडी। विनाश आपका इन्तजार करे, आप विनाश का इन्तजार नहीं करो। वह रचना है, आप रचता हो। सदा एवररेडी।* क्या समझा? अटेन्शन रखना। जो भी कमी महसूस हो उसे बहुत जल्दी से जल्दी समाप्त करो। सम्पन्न बनना अर्थात् कमजोरी को खत्म करना। ऐसे नहीं- यहाँ आये तो यहाँ के, वहाँ गये तो वहाँ के। सभी तीव्र पुरुषार्थी बनकर जाना।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ *समझा, समय की गति कितनी विकराल रूप लेने वाली है।* ऐसे सयम के लिए एवररेडी हो ना? या डेट बतायेंगे। तब तैयार होंगे। *डेट का मालूम होने से सोल कान्सेस के बजाए डेट कान्सेस हो जायेंगे।* फिर फुल पास हो नहीं सकेंगे। इसलिए डेट बताई नहीं जायेगी लेकिन डेट स्वयं ही आप सबको टच होगी।

〰✧ *ऐसे अनुभव करेंगे जैसे इन आँखों के आगे कोई दृश्य देखते हो तो कितना स्पष्ट दिखाई देता है।* ऐसे इनएडवान्स भविष्य स्पष्ट रूप में अनुभव करेंगे।

〰✧ लेकिन इसके लिए जहान के नूरों की आँखें सदा खुली रहें। अगर माया

की धूल होगी तो स्पष्ट देख नहीं सकेंगे। समझा, क्या अभ्यास करना है? *ड्रेस बदली करने का अभ्यास करो।*

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ सभी सदा साक्षी स्थिति में स्थित हो, हर कर्म करते हो? *जो साक्षी हो कर्म करते हैं। उन्हें स्वत: ही बाप के साथी-पन का अनुभव भी होता है।* इसलिए सदा साक्षी अवस्था में स्थित रहो। देह से भी साक्षी जब देह के सम्बन्ध और देह के साक्षी बन जाते हो तो स्वत: ही इस पुरानी दुनिया से भी साक्षी हो जाते हो। यही स्टेज सहज योगी का अनुभव कराती है - तो सदा साक्षी इसको कहते हैं साथ में रहते हुए भी निर्लेप। *आत्मा निर्लेप नही है लेकिन आत्मअभिमानी स्टेज निर्लेप है अर्थात माया के लेप व आकर्षण से परे है।* न्यारा अर्थात निर्लेप। तो सदा ऐसी अवस्था में स्थित रहते हो? किसी भी प्रकार की माया का वार न हो।

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

——————————————————

∬6∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी में रहना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा मेरे जीवन को यूँ सुंदरता के रंगों से सजाने वाले... पवित्रता के सागर... शिवबाबा की यादों में खो जाती हूँ... प्यारे बाबा ने पवित्रता के रंग में डुबो कर... मुझ आत्मा को महकता हुआ फूल बना दिया है... शिवपिता और ब्रह्मा माँ के आंगन में खिलने वाला... खूबसूरत... महकता गुलाब का फूल मैं आत्मा... ज्ञान और योग के पानी से निरन्तर खिली हुई... *याद और सेवा से सनी हुई मैं आत्मा... पूरे विश्व की आत्माओं को अपनी रूहानियत की खुशबू से सरोबार कर रही हूँ...*

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा का रूहानी श्रृंगार करते हुए वरदान दिया और कहा :-* "मीठे बच्चे... "पवित्र भव, योगी भव"... *सदा पवित्रता की पर्सनैलिटी और रॉयलिटी से सजी रहना... यही पवित्रता की पर्सनैलिटी विश्व की अन्य आत्माओं को पवित्रता की ओर आकर्षित करेगी...* अपनी चलन से आत्माओं को रूहानी रॉयलिटी का अनुभव कराओ... रूहानी दर्पण बन जाओ... जो भी देखे... बस देखता रह जाये..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा प्यारे बाबा की श्रीमत का पालन करते हुए कहती हूँ:-* "मीठे प्यारे बाबा... मैं आपको पाकर रूहानी गुलाब बन निखर गई हूँ... अब मैं मात्र शरीर नहीं, अपितु प्यारी पवित्र आत्मा हूँ, आपने मेरे नीरस जीवन को रसीला बना दिया है... *मैं आत्मा आपकी याद के नशे में मदमस्त... पूरे विश्व को अपनी रूहानियत की खुशबू से महका रही हूँ..."*

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को मेरे श्रेष्ठ भाग्य का नशा दिलाते हुए कहते :-*

"मीठे प्यारे लाडले बच्चे... कितनी सौभाग्यशाली आत्मा हो तुम... जो स्वयं भगवान ने दिल की तिजोरी में छुपा कर रखा है..." इसी तरह पवित्र जीवन अपना... *अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाकर खुशियों के झूले में झूलते रहो और सबके जीवन आप समान खुशियो से महकाओ...* महादानी, वरदानी बन सबकी आशायें पूरी करो..."

➽ _ ➽ *मैं आत्मा बाबा के स्नेह प्यार की बरसात में रंगी हुई कहती हूँ :- * "मेरे मीठे प्यारे बाबा... आपने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर... मुझ साधारण आत्मा को विशेष बना दिया..." खूबसूरत ज्ञान परी बना दिया... चमकता हुआ हीरा बना दिया... *ऐसे प्यार करने वाले "शिव साजन" को पाकर मैं आत्मा तो धन्य धन्य हो गई... और यह भाग्य हरेक के दिल पर सजा रही हूँ..."*

❉ *बाबा बड़े प्यार से संगमयुग में सबसे बड़ी सौगात सबसे बड़े खजाने का महत्व बताते हुए कहते हैं:-* "मीठी बच्ची... खुशी का खजाना सबसे बड़ा है... इस खुशी के लिये लोग तरसते हैं... तड़पते हैं... बच्ची... आप सदा ख़ुशी के झूले में नाचने वाली हो... *अमृतवेले से लेकर इस खुशी के खजाने को यूज़ करो... सारा दिन खुशी बनी रहेगी... और सारा दिन रूहानियत फैलाते रहोगे..."*

➽ _ ➽ *मैं आत्मा मीठे बाबा की श्रीमत को गले लगाते हुए कहती हूँ :-* "मेरे मन के मीत... मेरे सिकीलधे बाबा... *मैं स्वयं भी खुश रहती हूँ और सबको खुशी बांटती हूँ... और अपनी वृति, दृष्टि, कृति और वाणी द्वारा सबको अपनी रूहानी रॉयलिटी का अनुभव करवा रही हूँ..."* मीठे बाबा को दिल से धन्यवाद देकर मैं आत्मा... अपनी स्थूल देह में लौट आई..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- स्वयं को मधुबन निवासी अनुभव करना*"

➻ _ ➻ भगवान की अवतरण भूमि मधुबन की स्मृति आते ही आत्मा रूपी पँछी ज्ञान और योग के पंख लगा कर सेकेंड में उस पावन धरनी पर पहुँच कर एक गहन सुकून की अनुभूति करने लगता है और मन अनेक सुखद स्मृतियों में खो जाता है। *मम्मा बाबा की साकार पालना, वरिष्ठ दादियों का स्नेह और प्यार, साकार में आ कर भगवान का अपने बच्चों से मिलन मनाना सभी दृश्य एक - एक करके आंखों के सामने उभर आते हैं और मन को आनन्दविभोर कर देते हैं*।

➻ _ ➻ अपने पिता परमात्मा की इस अवतरण भूमि मधुबन की स्मृति मुझे मधुबन के आंगन में ले आती है और मन बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं स्वयं को मधुबन के पांडव भवन में पाती हूँ। *मन में शक्तिशाली बनने का दृढ संकल्प लिए मै शांति स्तम्भ पहुँचती हूँ और जा कर शान्ति स्तम्भ के नीचे बैठ जाती हूँ*। शांति के शक्तिशाली प्रकम्पन इस महाशक्तिस्तम्भ से निकल कर चारों ओर फ़ैल रहें हैं। मेरे चारों ओर शांति का एक बहुत ही विशाल औरा बना हुआ हैं जो मुझे असीम शांति का अनुभव करवा रहा है। *अनन्त शक्तियों की किरणें इस महाशक्ति स्तम्भ से निकल कर मुझ आत्मा में प्रवेश कर रही हैं और मुझे शक्तिशाली बना रही हैं*।

➻ _ ➻ शक्तिशाली स्थिति में स्थित हो कर अब मैं बाबा के कमरे की ओर चल पड़ती हूँ।और जैसे ही बाबा के कमरे में कदम रखती हूँ कोने में सामने रखे पलंग पर अव्यक्त बापदादा दिखाई देते हैं और कानों में उनकी अव्यक्त आवाज स्पष्ट सुनाई देती है। *अपने अव्यक्त स्वरूप में स्थित हो कर अव्यक्त बापदादा की आवाज मैं सुन रही हूँ*। बाबा कह रहे हैं बच्चे -"बाप समान बनने का दृढ संकल्प उतपन्न हो तो बापदादा के कमरे में आ जाना"। यह कहकर बाबा अपना वरदानीमूर्त हाथ मेरे सिर पर रख देते हैं। *बाबा के वरदानी हस्तों से आ रही लाइट माइट मुझे बाप समान स्थिति में स्थित कर देती है*।

➻ _ ➻ बाप समान स्थिति का अनुभव करते हुए अपने लाइट माइट स्वरुप में मैं अब बाबा के कमरे से निकल हिस्ट्रीहॉल में पहुँचती हूँ। *यहां पहुंच कर बाबा के ट्रांस लाइट के चित्र के सामने बैठते ही ऐसा अनुभव होता है जैसे मेरे मन मे चल रहे सभी संकल्प बिल्कुल शांन्त हो गए हैं*। अब मैं हिस्टीहाल में

लगे एक - एक चित्र को देख रही हूँ। यज्ञ के आदि रत्नों के इन चित्रों से विशेष प्रेरणा मिल रही है जो मुझे शक्तिशाली स्थिति में स्थित कर रही है।

➳ _ ➳ शक्तिशाली स्थिति का अनुभव करके अब मैं बाबा की कुटिया में पहुँचती हूँ। यहां पहुंचते ही ऐसा अनुभव होता है जैसे बापदादा मेरे ही इंतजार में अपनी बाँहें पसारे खड़े हैं। देखते ही बाबा मुझे अपने गले लगा लेते हैं। *मेरा हाथ पकड़ कर बाबा मुझे अपने पास बिठा कर मेरे साथ मीठी - मीठी रूह रिहान करने लगते हैं*। अपने मन की हर बात मैं बाबा को बता रही हूँ। बाबा बड़े प्यार से मुस्कराते हुए मेरी हर बात को सुन रहें हैं और अपनी शक्तिशाली मीठी दृष्टि से मेरे अंदर बल भर रहें हैं।

➳ _ ➳ अपने मधुबन घर की यात्रा और बाबा से मीठी - मीठी रूहरिहान करके फिर से मन बुद्धि के विमान पर बैठ मैं वापिस अपने कर्मक्षेत्र पर लौट आती हूँ। *अब मैं अपने कर्मक्षेत्र पर रहते, हर कर्म करते बुध्दि से सदैव चलते फिरते उठते बैठते अपने मधुबन घर की स्मृति में रहती हूँ*। यह स्मृति मुझे लौकिकता में भी अलौकिकता का अनुभव करवा कर उमंग उत्साह से सदैव भरपूर करती रहती है।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव बीती को बीती कर देती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव बीती बातों से शिक्षा लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा आगे के लिए सदा सावधान रहती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं सदा उत्साह में रह निराशावादी को आशावादी बनाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सच्ची सेवाधारी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

───────────────────────

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ लेकिन फिर भी सम्बन्ध जोड़ने के कारण सम्बन्ध के आधार पर स्वर्ग का अधिकार वर्से में पा ही लेते हैं - क्योंकि ब्राह्मण सो देवता, इसी विधि के प्रमाण देवपद की प्राप्ति का अधिकार पा ही लेते हैं। *सतयुग को कहा ही जाता है - देवताओं का युग। चाहे राजा हो, चाहे प्रजा हो लेकिन धर्म देवता ही है - क्योंकि जब ऊँचे ते ऊँचे बाप ने बच्चा बनाया तो उँचे बाप के हर बच्चे को स्वर्ग के वर्से का अधिकार, देवता बनने का अधिकार, जन्म सिद्ध अधिकार में प्राप्त हो ही जाता है। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी बनना अर्थात् स्वर्ग के वर्से के अधिकार की अविनाशी स्टैम्प लग जाना।* सारे विश्व से ऐसा अधिकार पाने वाली सर्व आत्माओं में से कोई आत्मायें ही निकलती हैं। इसलिए ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना कोई साधारण बात नहीं समझना। ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना ही विशेषता है और इसी विशेषता के कारण विशेष आत्माओं की लिस्ट में आ जाते हैं। इसलिए ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना अर्थात् ब्राह्मण लोक के, ब्राह्मण संसार के,ब्राह्मण परिवार के बनना।

✺ *"ड्रिल :- सतयुगी वर्से की स्मृति में रहना।"*

➺ _ ➺ *मैं फरिश्ता प्रेम सागर की लहरों में लहराती हुई, खुशियों के झूले में झूलती हुई उमंग उत्साह के पंख लगाकर उड़ चलती हूँ और पहुंच जाती हूं इस धरती के स्वर्ग मधुबन पावन भूमि पर...* मधुबन की शांति और सुकून का अनुभव करती पूरे मधुबन का चक्कर लगा रही हूँ... मैं आत्मा सभी सांसारिक झमेलों से मुक्त होकर कल्प के सबसे बड़े मिलन मेले में आई हूँ... मधुबन के डायमंड हाल में पहुंच जाती हूँ... चारों ओर सफेद पोश फरिश्तों के बीच मैं फरिश्ता योगयुक्त अवस्था में बैठ जाती हूँ... अव्यक्त बापदादा आते ही अपनी मीठी दृष्टि देकर नजरों से निहाल करते हैं... *अव्यक्त बापदादा की पावन दृष्टि से मैं आत्मा अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जाती हूँ... और स्टेज पर बाबा के सम्मुख पहुंच जाती हूँ...*

➺ _ ➺ अव्यक्त बापदादा से अव्यक्त मिलन मनाते हुए अतीन्द्रिय सुखों में खो जाती हूँ... *फिर बाबा मुझे दिव्य दर्पण सौगात में देते हैं... जैसे ही मैं आत्मा दिव्य दर्पण में देखती हूँ मुझे अपने तीनों काल स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं...* मैं आत्मा उत्सुकतावश अपना भविष्य देखती हूँ... *मैं फरिश्ता दिव्य दर्पण के रास्ते सतयुगी स्वर्णिम दुनिया में पहुँच जाती हूँ... जहाँ चारों ओर सोने, हीरों से सजे हुए भव्य जगमगाते हुए महल नजर आ रहे हैं... चारों ओर देवी-देवता नज़र आ रहे हैं...* जो आजकल के देवी देवताओं के चित्र हैं उनसे भी अत्यंत सुन्दर, सम्पन्न, दैवीय गुणों से भरपूर दिख रहे हैं... सभी आत्मिक स्वरुप में स्थित हैं... न कोई माया है, न अपवित्रता है, न कोई विकार हैं... प्रकृति भी सतोप्रधान है... यहाँ की प्रजा भी कितनी सम्पन्न और सुखी हैं...

➺ _ ➺ मैं फरिश्ता स्वयं को एक दिव्य अलौकिक शहजादी के रूप में महल में सोता हुआ देख रही हूँ... *सर्वगुण संपन्न, 16 कलाओं से सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी अवस्था में मैं अति तेजस्वी, दिव्य शहजादी के रूप में स्वयं को अनुभव कर रही हूँ...* अमृतवेले पंछियों की मधुर साज से उठ जाती हूँ... पंछी भिन्न-भिन्न सुन्दर आवाजों से मेरा मनोरंजन कर रहे हैं... नैचुरल पहाड़ों से क्रॉस करता हुआ झरना बह रहा है... सुगन्धित जडी-बूटियों वाले खुशबूदार झरने में नहाकर सुन्दर देवताई ड्रेस पहनती हूँ... सोने, हीरों के आभूषणों से दासियाँ मेरा श्रृंगार करती हैं... रत्नजडित ताज पहनकर मैं शहजादी देवताई परिवार के

साथ वैरायटी प्रकार के स्वादिष्ट भोजन खाती हूँ... महल से बाहर निकलकर सुन्दर-सुन्दर फूलों और फलों से लदे हुए बगीचे में प्रवेश करती हूँ... एक फल तोड़कर उसका रस पीती हूँ... कितना मीठा, स्वादिष्ट और रसीला है... *रत्नजडित झूले में सखियों संग झूल रही हूँ... खेल-खेल में पढाई कर रही हूँ... सुन्दर चित्रकारी कर रही हूँ... रतन जडित नैचुरल साज बजाकर मधुर गायन कर रही हूँ...*

➳ _ ➳ फिर मैं देवता पुष्पक विमान में बैठकर आसमान में सैर करती हूँ... *सैर करते-करते मैं फरिश्ता गोल्डन ऐज से फिर से डायमंड युग में डायमंड हाल में पहुँच जाती हूँ...* सामने बापदादा मुझे देख मुस्कुरा रहे हैं... बाबा मुझे वरदानों से भरपूर कर रहे हैं... चारों ओर ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी भाई-बहनें अपने पिता से मिलन मनाकर खुशियों में नाच रहे हैं... मैं अपने श्रेष्ठ अविनाशी भाग्य पर नाज कर रही हूँ... मुझ आत्मा के दिव्य चक्षु खुल गए हैं, मुझ आत्मा की बुद्धि का ताला खुल गया है... *मैं आत्मा ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी बनने की विशेषता को समझ गई हूँ... ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना कोई साधारण बात नहीं है... कोटो में कोई कोई में भी कोई आत्मायें ही निकलती हैं...* ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना अर्थात् स्वर्ग के वर्से के अधिकार की अविनाशी स्टैम्प लग जाना...

➳ _ ➳ *ब्राह्मण लोक की, ब्राह्मण संसार की, ब्राह्मण परिवार की बनकर स्वर्ग के वर्से के अधिकार की अविनाशी स्टैम्प लगाकर, मैं विशेष आत्माओं की लिस्ट में आ गई हूँ...* बाबा को शुक्रिया करती हूँ कितना ऊंचा भाग्य बना दिया है मेरा... बाबा ने अपना बच्चा बनाकर स्वर्ग के वर्से का अधिकार, देवता बनने का जन्म सिद्ध अधिकार दे दिया है... बाबा मिल गया सब कुछ मिल गया... अलौकिक परिवार मिल गया, खुशियों का खजाना मिल गया... मैं आत्मा *बाबा से दिव्य अनुभूतियों की सौगात लेकर वापस अपने अकालतख्त पर विराजमान हो जाती हूँ... और सदा सतयुगी वर्से की स्मृति में रहती हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔